Lecture on
"Narrative and challenges in including the excluded"
by Shri Bezwada Wilson,
National Convenor, Safai Karmchari Andolan, (Magsaysay Award Winner)
on 13th March 2020

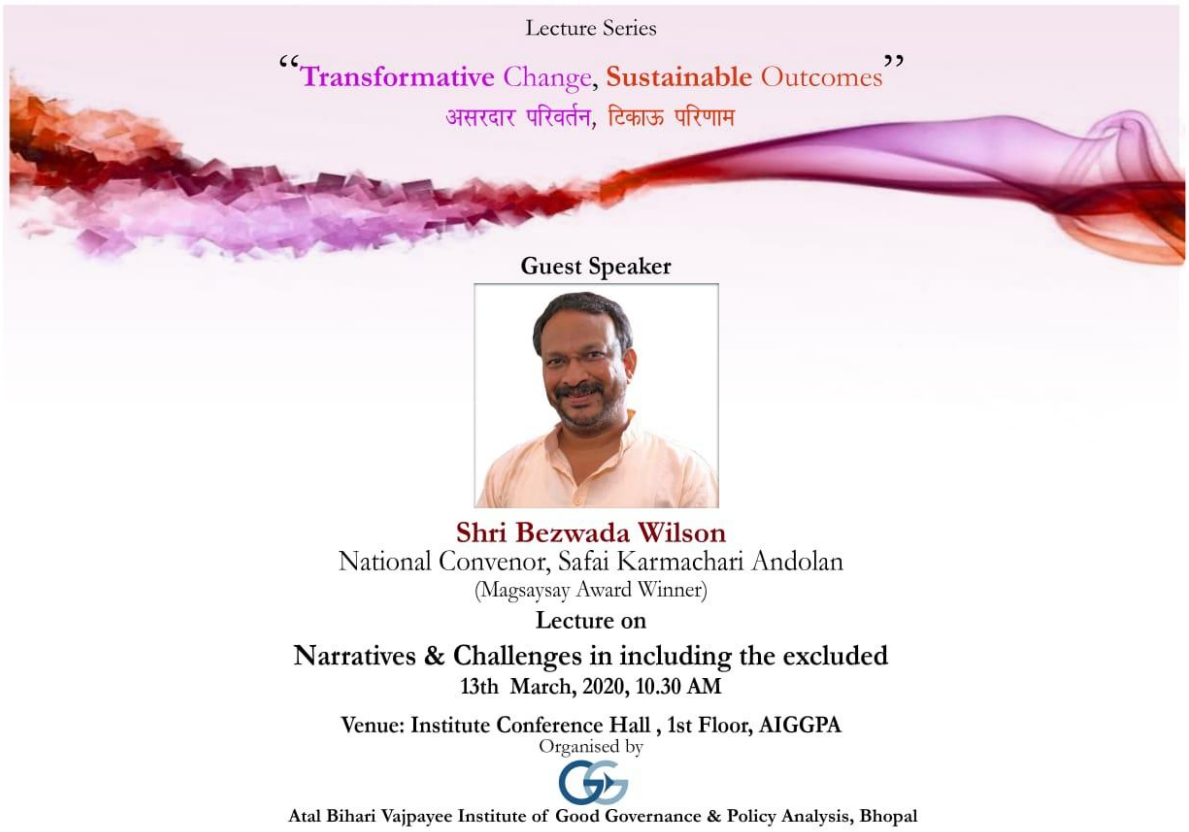

वाजपेयी
वेश्लेषण संस्थान
Shri R. Parasuram

Everyone should respect dignity of others: Wilson

■ Lecture series on 'Effective Change - Sustainable Results' at Institute of Good Governance organised

■ Staff Reporter

Magsaysay Awardee and National Convener of the Safai Karmachari Andolan Bezwada Wilson addressing during lecture series 'Effective Change - Sustainable Results' at Institute of Good Governance in the State capital on Friday.

"EVERYONE should respect the dignity of others like his. It is our responsibility to protect right to equality provided among citizens in the Constitution. Magsaysay Awardee and National Convener of the Safai Karmachari Andolan Bezwada Wilson said this while expressing his views on the 'Narratives and Challenges Including the Excluded' at a lecture series 'Effective Change-Sustainable Results' at the Atal Behari Vajpayee Institute of Good Governance and Policy Analysis.

Wilson said how we can ask others to do the work which we cannot do. After all, they are also human beings. He said that, my goal is to end the practise of manual scavenging. He gave detailed information about the works being carried out in this direction. He said that wherever we are and whatever position we are on, we have to pay attention on how we are discharging our duties. There is a need for collective efforts to remove social evils. The Director General of the institute, Parshuram said that, it is necessary to think about what is happening, why it is happening and why it is not happening in the society. He said that social, political and economic changes are complementary to each other. If one of these lags behind, then there is no overall development. The Principal Advisors of the institute M M Upadhyay, Mangesh Tyagi, Girish Sharma and the entire staff of the institute were present on the occasion.

हर व्यक्ति अपने साथ दूसरों की डिग्निटी का भी सम्मान करें : विल्सन

सुशासन संस्थान में व्याख्यान माला असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम

भोपाल (काप्र)।

हर व्यक्ति को अपने साथ दूसरो की डिग्निटी का भी सम्मान करना चाहिए। संविधान में नागरिकों को प्रदत्त समानता के अधिकार का संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है।

मेग्सेसे अवार्ड विजेता और सफाई कर्मचारी आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक बेजवाड़ा विल्सन ने अटल विहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम में नेरेटिव्स एण्ड चेलेन्जेज इनक्लूडिंग द इक्सक्लूडेड व्याख्यान माला में विचार व्यक्त करते हुए यह बात कही। श्री विल्सन ने कहा कि जो काम हम नहीं कर सकते, वह दूसरों से कैसे करवा सकते हैं। आखिरकार वह भी मनुष्य है। उन्होंने कहा कि मैला ढोने की कुप्रथा को समाप्त करवाना ही मेरा लक्ष्य है। श्री विल्सन ने इस दिशा में किये जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम जहाँ पर भी हैं, जिस पद पर भी हैं, इस बात का ध्यान रखना होगा कि अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन किस तरह से कर रहे हैं। सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिये सामूहिक प्रयास की जरूरत है। संस्थान के महानिदेशक आर परशुराम ने कहा कि समाज में क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और क्यों नहीं हो रहा है, इस पर सोचना जरूरी है। उन्होंने कहा कि सोशल, पॉलिटिकल और इकोनॉमिक चेंज एक-दूसरे के पूरक हैं। इनमें से कोई एक पिछड़ता है, तो वहाँ पर समग्र विकास नहीं होता है। इस दौरान संस्थान के प्रमुख सलाहकार एम.एम. उपाध्याय, मंगेश त्यागी, गिरीश शर्मा और संस्थान का सम्पूर्ण स्टॉफ उपस्थित था।

सुशासन संस्थान में आयोजित व्याख्यान माला में बोले विल्सन

हर व्यक्ति अपने साथ दूसरों की डिग्निटी का भी करे सम्मान

नगर प्रतिनिधि, भोपाल। हर व्यक्ति को अपने साथ दूसरों की डिग्निटी का भी सम्मान करना चाहिए। संविधान में नागरिकों को प्रदत्त समानता के अधिकार का संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है। मेग्सेसे अवार्ड विजेता और सफाई कर्मचारी आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक बेजवाड़ा विल्सन ने अटल विहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में 'असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम' में 'नेरेटिव्स एंड चेलेन्जेज इनक्लूडिंग द इक्सक्लूडेड' व्याख्यान माला में विचार व्यक्त करते हुए यह बात कही।

विल्सन ने कहा कि जो काम हम नहीं कर सकते, वह दूसरों से कैसे करवा सकते हैं। आखिरकार वह भी मनुष्य है। उन्होंने कहा कि मैला ढोने की कुप्रथा को समाप्त करवाना मेरा लक्ष्य है। विल्सन ने इस दिशा में किये जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हम जहां पर भी हैं, जिस पद पर भी हैं, इस बात का ध्यान रखना होगा कि अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन किस तरह से कर रहे हैं। सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास की जरूरत है। संस्थान के महानिदेशक आर. परशुराम ने कहा कि समाज में क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और क्यों नहीं हो रहा है, इस पर सोचना जरूरी है। उन्होंने कहा कि सोशल, पॉलिटिकल और इकोनॉमिक चेंज एक-दूसरे के पूरक हैं। इनमें से कोई एक पिछड़ता है, तो वहां पर समग्र विकास नहीं होता है। इस दौरान संस्थान के प्रमुख सलाहकार एमएम उपाध्याय, मंगेश त्यागी, गिरीश शर्मा और संस्थान का स्टाफ मौजूद था।

अपने साथ दूसरों की डिग्निटी का भी करें सम्मान

सुशासन संस्थान में व्याख्यान माला में बोले विल्सन

भोपाल, 13 मार्च. हर व्यक्ति को अपने साथ दूसरों की डिग्निटी का भी सम्मान करना चाहिए. संविधान में नागरिकों को प्रदत्त समानता के अधिकार का संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है.

मेग्सेसे अवार्ड विजेता और सफाई कर्मचारी आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक बेजवाड़ा विल्सन ने अटल विहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान में असरदार परिवर्तन-टिकाऊ परिणाम में नेरेटिव्स एण्ड चेलेन्जेज इनक्लूडिंग द इक्सक्लूडेड व्याख्यान माला में विचार व्यक्त करते हुए यह बात कही. इस दौरान संस्थान के प्रमुख सलाहकार एमएम. उपाध्याय, मंगेश त्यागी, गिरीश शर्मा और संस्थान का सम्पूर्ण स्टॉफ उपस्थित था.

श्री विल्सन ने कहा कि जो काम हम नहीं कर सकते, वह दूसरों से कैसे करवा सकते हैं. आखिरकार वह भी मनुष्य हैं. उन्होंने कहा कि मैला ढोने की कुप्रथा को समाप्त करवाना ही मेरा लक्ष्य है. श्री विल्सन ने इस दिशा में किए जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने कहा कि हम जहां भी हैं, जिस पद पर भी हैं, इस बात का ध्यान रखना होगा कि अपने कर्तव्यों का निर्वहन किस तरह से कर रहे हैं. सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिये सामूहिक प्रयास की जरूरत है.

सोशल, पॉलिटिकल और इकोनॉमिक चेंज एक-दूसरे के पूरक

संस्थान के महानिदेशक परशुराम ने कहा कि समाज में क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है और क्यों नहीं हो रहा है, इस पर सोचना जरूरी है. उन्होंने कहा कि सोशल, पॉलिटिकल और इकोनॉमिक चेंज एक-दूसरे के पूरक हैं. इनमें से कोई एक पिछड़ता है, तो वहाँ पर समग्र विकास नहीं होता है.